देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

Impact Factor 3.811

Ajmer Visheshank

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

बदलती शिक्षा पद्धति और शिक्षकों की भूमिका

डॉ. सुलक्षणा अहलावत
प्रधान सम्पादक

प्रो. उन्नति शर्मा
विशेषांक सम्पादक

डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट
सम्पादक

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

Scanned with OKEN Scanner

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट	9-9
2.	मुगलकालीन प्रमुख शिक्षित महिलाएं	गीता कुमारी	10–13
3.	शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता	चन्द्र कान्त शर्मा, डॉ. रीटा झाझड़िया	14–16
4.	डिजिटल क्रांति में ऑनलाईन शिक्षण की चुनौतियाँ	अंजली कुमारी	17–21
5.	समर्थ एवं समृद्ध भारत की आधारभूमि संस्कृतभाषा : वर्तमान शिक्षा व्यवस्था, नवाचार एवं भावी संस्तुति के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. आशुतोष पारीक	22–29
6.	शिक्षा और साहित्य	डॉ0 मनीषा पाण्डेय तिवारी	30–34
7.	भारतीय संस्कृति में समाहित मनोवैज्ञानिक तथ्य	डॉ0 गीता पाण्डेय	35–38
8.	ऑनलाइन शिक्षण की चुनौतियाँ एवं उपयोगिता	डॉ. मंजु नावरिया	39–45
9.	वैदिक संस्कृति और शिक्षा	डॉ. नीलाक्षी जोशी	46–50
10.	COMPARING THE MERITS AND DEMERITS OF GURUKUL EDUCATIONAL SYSTEM AND MODERN EDUCATIONAL SYSTEM IN INDIA	RIYA BANERJEE	51-57
11.	वैदिक काल में शिक्षा पद्धति	कंचन शर्मा	58–59
12.	महिला साक्षरता की दिशाएँ	डॉ. मंजुलता कश्यप	64-70
13.	मुगलकालीन शिक्षा और साहित्य	शाहबाज आलम	71–75
14.	मुण्डाओं की पारम्परिक और आधुनिक शिक्षा व्यवस्था एवं मुण्डारी गद्य साहित्य	इंदिरा कोनगाड़ी	76–83
15.	पाणिनीय-व्याकरण की अध्ययन-अध्यापन पद्धतियाँ	किरण	84–87
17.	बौद्ध कालीन शिक्षा पद्धति	रजनी मीणा	88–90
18.	प्राचीन व वर्त्तमान शिक्षा पद्धति में नारी शिक्षा	रश्मि सिंह	91–92
19.	कोरोना संकट में वैदिक शिक्षाओं की प्रासंगिकता	डॉ. रीजा	93-96
20.	The Role of Yoga and Pranayama in Education	Dr. Nilachal Mishra	97-100
21.	प्राचीन व वर्त्तमान शिक्षा पद्धति में नारी शिक्षा	वर्षा निधि	101–108

Scanned with OKEN Scanner

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
अलमेर सेमिनार विशेषांक Page No. : 17-21

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

डिजिटल क्रांति में ऑनलाईन शिक्षण की चुनौतियाँ

-अंजली कुमारी

शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ, बिहार

सारांश :-

वर्तमान समय में कोरोना महामारी की वजह से लोगों को विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में लोग घरों में कैद हो गए हैं। बच्चों की शिक्षा को नियमित करने के लिए ऑनलाईन शिक्षा ही एक माध्यम है। आज देश के हजारो स्कूल और कॉलेज इसी ऑनलाईन शिक्षा के माध्यम से बच्चों को पढ़ा रहे हैं। अगर हम ध्यान से देखें तो जहाँ ये ऑनलाईन शिक्षा एक माध्यम है, वहीं कहीं न कहीं इसके सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं।

हमारे जीवन का मूल आधार शिक्षा है। प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले यह उनका मौलिक अधिकार है। अच्छी शिक्षा के बल हीं अच्छा करियर का निर्माण कर सकते हैं। अगर हम भारतीय शिक्षा व्यवस्था को देखे तो इसे तीन भागों में बाँटा जा सकता है। प्राचीन शिक्षा, औपनिवेशिक काल में शिक्षा तथा आधुनिक भारत की शिक्षा।

स्वतंत्रता के बाद शिक्षा के क्षेत्र में काफी बदलाव हुए हैं। इस बदलाव के कारण शिक्षा का स्वरूप परम्परागत से अत्याधुनिक हो चूका है।

शब्द कुंजी :- डिजिटल क्रांति, ऑनलाईन शिक्षण, वेब आधारित शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा, ऑनलाईन शिक्षा।

प्रस्तावना :-

शिक्षा व्यक्ति को दक्षता और आवश्यक ज्ञान प्रदान करती है। जो व्यक्ति को आदर्श रूप में कार्य करने योग्य बनाती है। अध्यापक और विद्यार्थी का सबसे पहले अन्तःक्रिया शिक्षा के क्षेत्र में होता है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति कला, ज्ञान, संस्कृति, व्यवसाय तथा हुनर को सीखता है। एक प्रमुख फ्रांसीसी समाजशास्त्री दुखाईम ने कहा है कि "शिक्षा कैसी भी हो इसे नैतिकता पर जोर देना चाहिए।"

शिक्षा को कई युगों में बाँटा गया है। ब्राहण युग शिक्षा का मतलब वेदों का ज्ञान था। इस युग में शिक्षा जाति के आधार पर दी जाती थी। महिलाओं को शिक्षा से बहिष्कृत किया गया था। उसके बाद मुस्लिम युग में शिक्षा के उद्देश्य में बदलाव आया। इस युग में शिक्षा धार्मिक प्रतिमानों के आधार पर दी जाती थी। व्यवसायिक एवं कला संबंधी शिक्षा जाति का माध्यम संस्कृत, अरबी और फारसी था।

ब्रिटिश काल में अधिक संख्या में लिपिक उत्पन्न करना शिक्षा का उद्देश्य था। उस समय शिक्षा छात्र केन्द्रित अधिक थी। इस काल में तकनीकी ज्ञान में दक्ष बनाएँ शिक्षा का उद्देश्य बिलकुल नहीं था।

Scanned with OKEN Scanner

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में बच्चों को सोचने के लिए प्रोत्साहित नहीं करती। उसे एक निश्चित पाठ्यक्रम अध्ययन कराया जाता है कि वह परीक्षा में उसे पुनरावत्ति कर दे। यह दोषपूर्ण व्यवस्था है। अगर हम 21वीं सदी की बात करे तो हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी का डिजिटल इंडिया कार्यक्रम "व्यवाहारिक पक्ष" है। उनकी दृष्टि में शिक्षा का ऐसा मॉडल को तैयार किया जाए जिसमें जिज्ञासा, उद्यमशीलता, सृजनशीलता, प्रौधोगिकी तथा नैतिक इन पाँच क्षमताओं का समावेश हो। अभी वर्तमान समय में ऑनलाईन शिक्षा बहुत लोकप्रिय हो गई है। इसमें विद्यार्थी दूर बैठे शिक्षक से इंटरनेट के माध्यम से शिक्षण का कार्य करते हैं। इस कार्य को करने के लिए ऑनलाईन प्लेटफार्म एप्प जैसे यूट्यूब, स्काइप, जूम आदि की मदद ली जा रही है।

ध्यान देने वाली बात यह भी है कि इस कोरोना काल में ऑनलाईन शिक्षा लोकप्रिय होने के बावजूद इसके सामने कई गंभीर समस्याओं को चुनौतिपूर्ण माना गया है।

ऑनलाईन शिक्षा क्या है?

ऑनलाईन शिक्षा को वर्ष 1999 में शिक्षा के क्षेत्र में वैद्य माना गया है जिन्हें दूसरे भाषा में दूरस्थ शिक्षा कहा जाता है। इसके पाठ्यक्रम का निर्धारण टैक्ट या इन्टरनेट के माध्यम से शिक्षण दिया जाता है।

आज भले हीं बच्चे शिक्षण संस्थान नहीं जा पा रहे हैं, ऑनलाईन शिक्षा के माध्यम से शिक्षक उन्हें घर बैठे लेक्चर पहुँचा रहे हैं। तेज गति के इन्टरनेट शिक्षा की इस प्रणाली की पहली आवश्यकता है।

कई शिक्षाविदों ने भी ऑनलाईन शिक्षा के माध्यम को स्वीकार नहीं किया लेकिन कोरोना के लॉकडाउन में शिक्षा प्रणाली अव्यवस्थित हुई उसे पटरी पर लाने के लिए डिजिटल एजुकेशन सबसे अच्छा विकल्प है।

आधुनिक समय का सबसे नया स्वरूप ऑनलाईन शिक्षा को कह सकते हैं। जिसमें विद्यार्थी कोसो दूर दूरी तय कर बोर्ड के सामने बैठकरर पढ़ने की जगह अपने शिक्षक के साथ घर बैठे ऑनलाईन क्लास से जुड़े रहते हैं। इस ऑनलाईन शिक्षा प्रणाली में वहीं विद्यार्थी सहभागी हो सकत हैं, जिनके पास इन्टरनेट कनेक्शन, लेपटॉप, मोबाईल या कम्प्यूटर आद हो।

जो छात्र विदेश जाकर पढ़ाई नहीं कर पाते हैं, उनके लिए शिक्षा का यह माध्यम बहुत लाभदायक है। वैसे छात्र घर बैठे विश्व के किसी भी प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान से सीधे तौर से जुड़ सकते हैं। इस ऑनलाईन शिक्षा के माध्यम से ज्ञान को आसानी से सुलभ तथा घर तक पहुँचाने का श्रेय है। ऑनलाईन शिक्षा का सबसे बड़ा फायदा है कि विद्यार्थी रिकॉर्ड कर क्लास को जब चाहे तब दुबारा देख सकते हैं।

डिजिटल क्लासरूम में शिक्षक तथा छात्र अपनी समस्याओं को आसानी से रख सकते हैं। जबकि पवरम्परागत शिक्षा प्रणाली में लिखकर अपनी समस्याओं को छात्र शिक्षक के सामने रखते थे।

कोरोना काल में आज घर से बाहर निकलना बहुत बड़ा चुनौती है। ऐसे में ऑनलाईन शिक्षा सबसे अच्छा विकल्प है। यह शिक्षा व्यवस्था को गतिशील बनाता है।

ऑनलाईन शिक्षा के लाभ :-

1. विद्यार्थी ऑनलाईन शिक्षा के माध्यम से ही घर बैठे किसी भी संस्थान से शिक्षा ग्रहण कर सकते है।
2. इस ऑनलाईन शिक्षा में छात्र अपनी समस्याओं का समाधान रेकॉर्ड क्लास को कई बार देखकर कर सकते हैं।
3. वर्चुअल क्लास में अगर छात्र को बिन्दु समझ नहीं आता है तो वह शिक्षक को आग्रह कर पुनः उस बिन्दु

Scanned with OKEN Scanner

को समझ सकता है।

4. स्कूल, कॉलेज तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले छात्र तथा छात्राओं के लिए ऑनलाईन शिक्षा सबसे अच्छा माध्यम है।

5. ऑनलाईन शिक्षा के माध्यम से ही कक्षा में छात्रों को चार्ट, विडियो, चित्र, गूगल मेप्स आदि के जरिये विषयों का सरल और गूढ़ ज्ञान दिया जाता है।

6. ऑनलाईन शिक्षा के जरिये स्कूली पाठ्यक्रम तो उपलब्ध है ही साथ हीं कुकिंग, कढ़ाई, पेंटिंग, सिलाई का शिक्षण घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं।

ऑनलाईन शिक्षण की चुनौतियाँ :-

1. जिन गाँव, कस्बों या शहरों में इंटरनेट की व्यवस्था उपलब्ध नहीं है। ऐसे में वहाँ पर ऑनलाईन शिक्षा प्रणाली बेहद कठिन है।

2. ऐसे जगह जहाँ पर इंटरनेट की स्पीड कम है वहाँ पर ऑनलाईन शिक्षा शुरू करना एक चुनौती है।

3. छात्रों के भाषाओं के अनुरूप इंटरनेट पर पाठ्यक्रम सामग्री की कमी से अध्ययन में समस्या हो सकती है।

4. कुशल शिक्षकों की कमी होने से ऑनलाईन शिक्षण चुनौतिपूर्ण है। क्योंकि अधिकांश शिक्षकों को इस व्यवस्था का सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है।

5. प्रैक्टिकल वाले विषयों में ऑनलाईन शिक्षण व्यवस्था से ज्ञान ले पाना एक चुनौति है।

6. इस ऑनलाईन शिक्षण में विद्यार्थी का सर्वांगिण विकास नहीं हो पाता है। यह एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

7. सभी शिक्षण संस्थान सामाजिक समावेश तथा समानता में एक भूमिका निभाते हैं। यह वह जगह है जहाँ सभी जाति, लिंग, वर्ग और समुदाय के लोग बिना किसी दवाब के साथ मिलकर अध्ययन करते हैं। यह महत्वपूर्ण सीख जीवन की वह पहलू है जो ऑनलाईन शिक्षा द्वारा कभी पूरा नहीं हो सकता है।

8. शिक्षक केवल स्कूल में बच्चों को पुस्तकों का ज्ञान नहीं देते हैं वह उनका भावनात्मक व्यवहार और सामाजिक विकास करना शिक्षक का उत्तरदायी होता है। लेकिन ऑनलाईन शिक्षण से यह संभव नहीं है। इसलिए से एक चुनौति के रूप में देखा जा सकता है।

9. जिन छात्रों के पास टैबलेट, कम्प्यूटर, लैपटॉप जैसी सुविधाऐं नहीं होने के कारण ऑनलाईन कक्षा में शिक्षण लेना एक समस्या है। वर्तमान समय में देश में ऐसे छात्रों की संख्या काफी है।

10. कोरोना जैसे महामारी से पहले भारत के अधिकतर शिक्षण संस्थानों को ऑनलाईन शिक्षा का अनुभव नहीं रहा है, ऐसे में ऑनलाईन शिक्षा के अनुरूप शिक्षण संस्थानों को ढ़ालना तथा बच्चों को अधिक से अधिक शिक्षण उपकरणों को उपलब्ध कराना एक चुनौती है।

ऑनलाईन शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम :-

1. डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अंदर डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने "भारत पढ़े ऑनलाईन" कार्यक्रम की शुरूआत की।

2. ई–यंत्र, ई–पाठशाला, नेशनल डिजिटल लाईब्रेरी ऑफ इंडिया, डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम, बायजू जैसी योजनाओं को सरकार ने शुभआरंभ किया।

Scanned with OKEN Scanner

3. स्वयं, स्वयं प्रभा नामक पोर्टल की शुरूआत सरकार द्वारा की गई इसके साथ ही 15 जीसैट सेटेलाईट तथा 32 डीटीएच चैनलों का भी आरंभ किया गया।

ऑनलाईन शिक्षण के महत्व :-

कोरोना जैसे महामारी के समय में ऑनलाईन शिक्षा सबसे ज्यादा लोकप्रिय तथा प्रचलित हो गई है। ऑनलाईन शिक्षा के माध्यम से ही शिक्षक देश तथा दुनियाँ के किसी भी जगह से अपने छात्रों से जुड़ सकते हैं। आजकल लोग मोबाईल के माध्यम से भी ऑनलाईन शिक्षण के लिए जुड़ रहे हैं। ऑनलाईन शिक्षा आज एक महत्वपूर्ण शिक्षा का माध्यम बनकर उभरा है। ऑनलाईन शिक्षा ने छात्रों के समस्याओं का समाधान में योगदान दिया है। लॉकडाउन की इस कठिन परिस्थिति में जहाँ सभी स्कूल, कॉलेज तथा विश्वविद्यालय बंद है। वहीं ऑनलाईन के माध्यम से ही सभी कक्षाओं की पढ़ाई संभव हो पाई है। विश्व के सभी छात्र तथा छात्राओं ने ऑनलाईन शिक्षा का इस्तेमाल कर अपनी पढ़ाई को पुरी कर रहे हैं।

आज कोरोना काल में लोग ऑनलाईन शिक्षा का महत्व अच्छी तरह से समझ पा रहे हैं। वर्तमान समय में अगर ऑनलाईन माध्यम नहीं होती तो करोड़ों बच्चे पढ़ नहीं पाते। ऑनलाईन शिक्षा से समय तथा पैसे दोनों की बचत होती है। शिक्षक और विद्यार्थी पढ़ने तथ पढ़ाने का समय अपने सुविधा के अनुसार रख सकते हैं। ऑनलाईन शिक्षा में छात्र ऑनलाईन क्लास को रिकॉडिंग कर पुनः पढ़ सकते हैं। कई स्कूल, कॉलेज तथा विश्वविद्यालय में छात्रों को ऑनलाईन पढ़ाई कराई जातीहै। छात्र ऑनलाईन परीक्षा देकर अपनी डिग्री भी हासिल करते हैं। छात्र कई प्रकार के गतिविधियों को ऑनलाईन के माध्यम से करते है। जैसे नृत्य, संगीत, सिलाई, कढ़ाई, चित्रकारी, योग, आदि ये सभी आसानी तथा सरलता से सिखी जाती है। जिससे छात्रों का बहुमुखी विकास होता है।

कोरोना संकटकाल में लॉकडाउन की इस विषम परिस्थिति में आधे से अधिक महीने में सामाजिक दूरी का पालन करना पड़ा ऐसे में इस विकट परिस्थिति में शिक्षण संस्थान तथा विद्यार्थीयों के लिए ऑनलाईन शिक्षा एक वरदान साबित हुआ है। ऑनलाईन शिक्षा की तरफ लोगों की पंसद ज्यादा बढ़ी है। नौकरी करने वाले लोगों के पास समय का अभाव ज्यादा रहता है, लेकिन ऑनलाईन क्लास के माध्यम से लोग आगे की पढ़ाई भी कर लेते हैं। ऐसे में इन लोगों के लिए भी ऑनलाईन शिक्षा एक वरदान जैसा है।

ऑनलाईन शिक्षा को मजबूत बनाने के उपाय :-

1. कोरोना के संक्रमण से जो विकट परिस्थिति उत्पन्न हुई, ऐसे में ऑनलाईन शिक्षा व्यवस्था को और मजबूत बनाने के लिए दूसरे विकल्पों पर विचार करने के लिए विवश कर दिया है।
2. जिन स्थानों में इंटरनेट की व्यवस्था पहुँच नहीं रही है, उन स्थानों में इंटरनेट की गति को तेज करने का प्रयास करना चाहिए। जिससे ऑनलाईन शिक्षा व्यवस्था का सर्वाधिक विकास हो सके।
3. ऑनलाईन शिक्षा व्यवस्था के तहत शिक्षको को तकनीकी प्रशिक्षण देना चाहिए। जिसे ऑनलाईन शिक्षा को बेहतर बनाया जा सकता है।
4. बहुत ऐसे परिवार है जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं। ऐसे में ये परिवार अपने बच्चों को ऑनलाईन शिक्षा के लिए लॅपटॉप, एंड्रॉयड मोबाईल फोन आदि जैसे जरूरी उपकरणों को देने में असमर्थ है, सरकार इन गरीब बच्चों के लिए एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण करे जिससे इन बच्चों को इस उपकरण की सुविधा प्राप्त हो और

Scanned with OKEN Scanner

ये छात्र भी ऑनलाईन शिक्षा के क्षेत्र में आगे हो सकें।

4. वर्त्तमान समय में डिजिटल इंडिया, ई–बस्ता, पढ़े भारत जैसे अन्य अभियानों की शुरुआत की गई है। ऐसे में इन अभियानों को बढ़ावा देकर हम ऑनलाईन शिक्षा को मजबूत बना सकते हैं।

5. ऑनलाईन शिक्षा प्रणाली में छात्रों के अव्यवस्था का सामना नहीं करना पड़े इसलिए उनके पाठ्क्रम को सभी भाषा शैली में उपलब्ध करानी चाहिए।

निष्कर्ष :-

आज भी कई क्षेत्रों में ऑनलाईन शिक्षा में सुधार की जरूरत है। इसके अलावा ऑनलाईन शिक्षा दूर रहने वाले बच्चों के लिए सबसे उत्कृष्ट माध्यम है कोरोना जैसे महामारी में ऑनलाईन शिक्षा विश्व के सभी बच्चों के लिए वरदान सिद्ध हुई है।

संदर्भ :-

1. जे.पी.सिंह (2013): तृतीय संस्करण (PHI) : समाजशास्त्र अवधारणा एवं सिद्धांत, पृष्ठ सं0– 518
2. राम अहूजा, मुकेश आहूजा; रावत पब्लिकेशन्स; समाजशास्त्र विवेचना और परिप्रेक्ष्य, पृ0सं0– 397
3. वही, अध्याय– 17/398
4. वही, अध्याय – 17/399
5. योजना, मार्च– 2021

अन्य संदर्भ :-

1. www.google.come
2. इन्टरनेट व अंतरजाल से उपलब्ध।

Email- anjali.ktr1@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

Health, Society and Psychology
Problems, Challenges and Remedy

12

International Seminar

(23rd and 24th April, 2022)

Souvenir

Sponsored by

INDIAN PSYCHOLOGICAL ASSOCIATION

Organized by

PG DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
Thakur Prasad COLLEGE
MADHEPURA - 852113 (BIHAR), INDIA

Scanned with OKEN Scanner

109. मानवीय स्वास्थ्य पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव 94
मोनिका कुमारी

110. महिलाओं के उत्तम स्वास्थ्य हेतु सरकारी कल्याणकारी स्वास्थ्य कार्यक्रमों को सुगमता प्रदान करने में मास-मीडिया की भूमिका 95
प्रीति कुमारी

111. किशोरियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ एवं चुनौतियाँ 96
प्रियंका कुमारी

112. भारतीय महिलाओं की समाज में भूमिका 97
शशिकान्त कुमार

113. भारत में आधुनिकीकरण के संदर्भ में शिक्षा की विशेषतायें 98
श्वेता

114. युवाओं के लिए आतंकवाद एक गंभीर मुद्दा है? 99
श्रुति सुमन

115. साक्षरता अभियान को खेतीहर श्रमिक पर मनोविज्ञानीय प्रभाव 99
कुमारी स्नेहा

116. भारतीय छात्रों के तनाव के कारण और निदान एक अध्ययन 100
सुदीप कुमार झा

117. भारतीय समाज में दलित महिलाओं को स्वास्थ्य समस्याएँ एवं चुनौतियाँ 101
उपासना कुमारी

118. बाल अपराध: एक सामाजिक समस्या 102
डॉ. स्वीटी कुमारी

119. भारत निर्माण योजना सामाजिक समस्याएँ एवं चुनौतियाँ 103
विवेकानन्द

120. भारत में सुशासन और चुनौतियाँ एवं महिला सशक्तिकरण 104
तृप्ति कुमारी

121. निम्नवर्गीय कामकाजी महिलाओं (30-35 वर्ष) की शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं का उनके जीवन पर प्रभाव . 105
निधि कुमारी

122. कोरोना काल में मनोवैज्ञानिकों की भूमिका 106
डॉ. राज कुमार रजक

123. भारत में नौकरशाही एवं सुशासन 107
राजन कुमार

124. स्वच्छता और स्वास्थ्य: सुखी जीवन की आधारशिला 108
अमरेश कुमार अमर
प्रो. डॉ. आर. के. पी. रमन

125. सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में वैश्विक महामारी (कोविड-19) प्रभाव का आनुभविक मनोवैज्ञानिक शोध अध्ययन । 109
डॉ. कविता चौधरी

126. तनाव के कारणों का मनोवैज्ञानिक एवं यौगिक निदान 110
सुनीता कुमारी

127. कोरोना काल एवं लॉकडाउन का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन 111
सोनी कुमारी

128. भारत में नारी मुक्ति आन्दोलन : एक मनो-सामाजिक अध्ययन 112
डॉ. सीमा कुमारी

129. स्त्रियों की स्थिति का आधुनिक संदर्भ 113
डॉ. प्रीति कुमारी

130. बाल अपराध : कारण एवं निवारण 114
डॉ. बासुकीनाथ

131. ग्रामीण भारत में डिजिटल सेवाओं से मजबूत होता स्वास्थ्य-व्यवस्था 115
अंजली कुमारी

132. सेवानिवृत्त व्यक्तियों में सामाजिक समर्थन और मानसिक स्वास्थ्य - एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन 116
डॉ. रश्मि दत्त

133. मनोविज्ञान में पूर्वाग्रह का धारणा 117
डॉ. शंकर यादव

134. सामाजिक समरसता और मानसिक स्वास्थ्य 118
गौरव कुमार सिंह

Scanned with OKEN Scanner

ग्रामीण भारत में डिजिटल सेवाओं से मजबूत होता स्वास्थ्य-व्यवस्था

अंजली कुमारी
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ, बिहार

भारत समेत पूरा विश्व अभी कोरोना संकट से बाहर नहीं हो पाया है। इस कोरोना संकट ने सरकार, स्वास्थ्य सेवाओं और आम जन के सामने चुनौती खड़ी कर रहा है। कोरोना संकट के सामने विश्व की बड़ी–बड़ी आर्थिक महाशक्तियाँ भी असहाय नजर आई। हालांकि, हर संकट अपने साथ कुछ संभावनाऐं व अवसर लेकर आता है। यह अवसर एवं संभावनाऐं हमें स्वास्थ्य क्षेत्र मे तकनीक एव नवाचार के प्रयोग के जरिए भारत को अनुप्रमाणित किया है। जनसांख्यिकी और भौगोलिक विविधताओं के बावजूद भारत ने डिजिटल संसाधनो का जिस तरह स्वास्थ्य सेवाओं में समावेश किया है, उससे ग्रामीण भारत तक इन स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुँच सुगम हो रही है। इस सुगमता के कारण स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर गाँव और षहर के बीच की खाई बहुत कम हुई है इसके साथ वहीं सामुदायिक स्वास्थ्य बेहतर होने से लोगों के जीवन स्तर में गुणात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में डिजिटल प्रयोग को सिर्फ आर्थिक विकास व सामाजिक विकास के रूप में नहीं देखा जा सकता। वर्तमान समय में यह प्रत्येक व्यक्ति को "स्वास्थ्य से समर्षद्धि" की ओर ले जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण तथा प्रभावी उपक्रम है। देश के ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे व्यक्तियों तक विशेषज्ञ डॉक्टरों की पहुँच सुनिश्चित करने हर लोगों की सेहत का डाटा एकत्र करने, बीमरियों का पता लगाने, रोग का पूर्व निदान, महामारियों के समय प्रभावी सूचना तंत्र के विकास में स्वास्थ्य सेवाओ का डिजिटल रूप कारगर साबित हो रहा है। सूचना और प्रौद्योगिकी आधारित स्वास्थ्य व्यवस्था को नया आयाम दे रही है। अब यह शहर तक हीं नहीं गाँव और कस्बों में रहने वाले लोग भी ई–संजीवनी, नेशनल हेल्थ पोर्टल, टेलीमेडिसिन, ई–फॉर्मेसी और स्वास्थ्य पहचान–पत्र जैसे डिजिटल हेल्थ इकोसिस्टम के विभिन्न आयामों को अपना रही है।

प्रायः यह देखा जाता है कि कम पढ़े–लिखे एवं ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोग किसी भी बीमारी से जुडे अपने दस्तावेज को सुरक्षित नहीं रख पाते हैं। ऐसे में जब भी वह किसी चिकित्सकीय परामर्ष के लिए जाते हैं तो उन्हें दोबारा मेडिकल जाँच की प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। इसमें समय और संसाधन दोनों का ह्रास होता है। डिजिटल मिशन आयुष्मान भारत में एक व्यवस्था विकसित की गई है, जिसमें मरीज को डॉक्टर से परामर्श करने के लिए मूर्त रूप से उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं पड़ती। सुदूर इलाकों में भी मरीजों को उनके घर पर हीं सामान्य बीमारियों की स्थिति में टेलीमेडिसिन के तहत उपचार प्रदान किया जाता है।

वर्तमान में 'टेलिमेडिसिन' को ई–स्वास्थ्य सुविधा का एक बेहतरीन उदाहरण माना जाता है। टेलीमेडिसिन भारत की सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं में वर्षद्धि कर सकता है। इससे ग्रामीण आबादी अत्यधिक लाभान्वित होगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों में हमें समय के साथ तकनीक व नवाचारों के साथ कदमताल करना होगा।

यह बात स्पष्ट तौर पर कहा जा सकता है कि स्वास्थ्य सेवाऐं एवं सुविधाऐं एक मंच पर आएँगी तो आम लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं का चयन करने व उसका मानक निर्धारण करने में भी मदद मिलेगी। व्यक्तिगत स्वास्थ्य रिकॉर्ड की एक प्रणाली बनने से स्वास्थ्य पेशेवरों, सेवा प्रदाताओं व मरीज को एक–दूसरे की जानकारी मिल सकेगी। इसके साथ स्वास्थ्य संबंधी स्थानीय चुनौतियाँ के निवारण हेतु नीति निर्माताओं एवं कार्यक्रम प्रबंधकों के पास डाटा की बेहतरीन पहुँच होगी। इससे सरकार को विभिन्न प्रकार के निर्णय लेने में सहायता मिलेगी। इसके फलस्वरूप सामुदायिक एवं भौगोलिक चुनौतियों को दूर करते हुए इस स्वास्थ्य कार्यक्रम के सुगमता से आगे किया जा सकेगा।

शहरों के बाद अब ग्रामीण भारत में स्वास्थ्य सेवाओं में डिजिटलिकरण देखने को मिलने लगा है। हालाकि इससे जुडी कुद चुनौतियाँ भी हैं जिसके समाधान की जरूरत है। जैसे डिजिटल संसाधनों के विस्तार के साथ डिजिटल साक्षरता की अहम भूमिका होगा। प्राथमिक स्वास्थय से जुड़ी बुनियादी सुविधाओं को बढ़ाकर मरीज और चिकित्सा सेवाओं के बीच की दूरी को कम किया जा सकेगा। टेलीमेडिसिन के जरिए चिकित्सकीय विशेषज्ञता का लाभ ग्रामीण लोगों को मिले इसके लिए इस अभियान से जुड़ने वाले डॉक्टरों स्वास्थ्यकर्मियों को विशेष प्रोत्साहन दिए जाने की आवश्यकता है।

□□□

Scanned with OKEN Scanner

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL
ISSUE-33
VOLUME-7
ISSN-2454-6283
IMPACT FACTOR- IIJIF
July-sept., 2023
शोध-ऋतु
https://doie.org/10.0715/shodritu.2023472199
web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

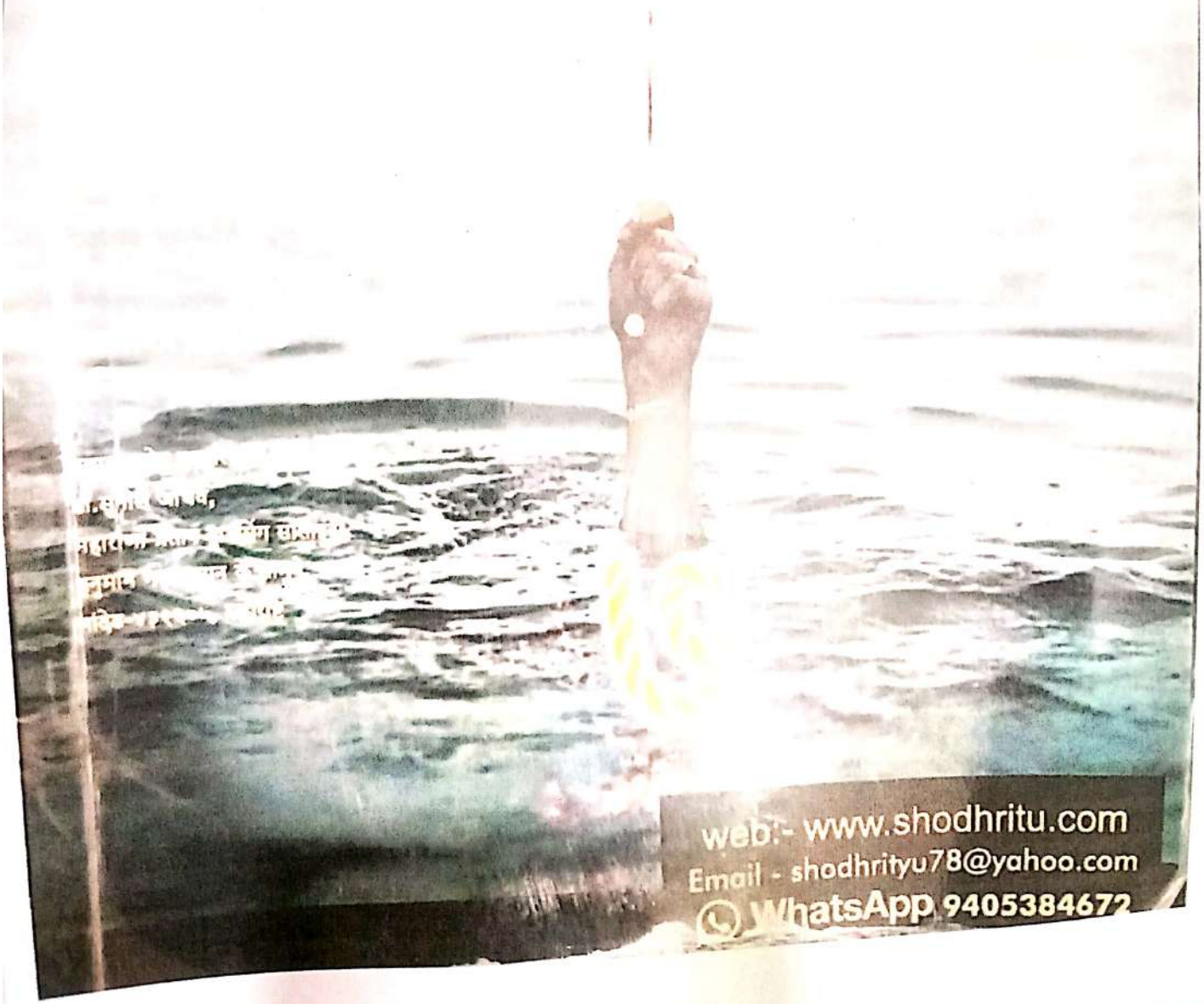

8

अनुक्रमणिका

1.विधवाओं की स्थिति के विषय में गांधीजी के विचार .....
–योगिता रानी पंवार.....6
2.आत्मनिर्भर भारत में सशक्त होती महिलाएं: एक अध्ययन.....6
–डॉ. विनी शर्मा.....8
3.रेणु के कथा–साहित्य का एक समाजशास्त्रीय विवेचन.....8
–कृष्ण कुमार पाल.....11
4.नाई समाज में व्यावसायिक गतिशीलता (जनपद अयोध्या के हैरिंगटनगंज विकासखंड पर आधारित एक समाज–वैज्ञानिक अध्ययन).....11
–डॉ.सन्तराम पाल.....13
5.कविता की अर्थवत्ता की तलाश :आलोचक जीवन सिंह की दृष्टि में.....13
–आशीष कुमार तिवारी.....17
6.वागड़ की राजनीति में भोगीलाल पण्ड्या का योगदान.....17
–डॉ.अलका श्रीवास्तव.....20
7.वागड़ी गीतों में लोक चेतना विविध रंग.....20
–डॉ.प्रवीण कुमार सक्सेना.....21
8.समावेशी शिक्षा और अध्यापक की भूमिका.....21
–अनुज कुमार रावत.....23
9.राजस्व विकास : केन्द्र सरकार की आय में वृद्धि के संदर्भ में.....23
–डॉ.कुमुद श्रीवास्तव.....25
10.पद्मावत में स्त्री विद्रोह का स्वर और दास्ता का जीवन.....25
–डॉ.रीता नामदेव.....28
11.प्रजातंत्र के विकास में महिला शिक्षा की आवश्यकता एवम् महत्व.....28
–डा०रोली द्वेवेदी.....31
12.आत्म निर्भर भारत और कृषि और अन्य प्राकृतिक संसाधन क्षेत्र का योगदान.....31
–डा.सुनीता.....34
13.'आपका बंटी' में चित्रित पारिवारिक संघर्ष.....34
–[1]डॉ.गुलाब राठोड, [2]श्रीमती राठोड लता.....36
14.परिवार में सदस्यों के मध्य अन्तः क्रिया के बदलते प्रतिमान उदयपुर के क्षेत्र के विभिन्न आय वर्ग के परिवारों पर आधारित (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन).....36
–डॉ.भावना उपाध्याय.....38
15.डिजिटल क्रांति से ग्रामीण समाज का बदलता स्वरुप.....38
– अंजली कुमारी.....41
16.'अण्णा भाऊ की दर्दभरी दास्तान' अस्वस्थ करनेवाला उपन्यास.....41
–विजया सोपानराव उफाडे.....42

Scanned with OKEN Scanner

15.डिजिटल क्रांति से ग्रामीण समाज का बदलता स्वरुप

– अंजली कुमारी
शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग,
पुर्णिया विश्वविद्यालय, पुर्णिया (बिहार)

इंटरनेट और भूमंडलीकरण के कारण आज पूरी दुनिया वसुदेव कुटुंबकम की ओर बढ़ रही है। ऐसे में भारतीय गांवों को सिर्फ रोटी, कपड़ा और मकान तक सीमित नहीं रखा जा सकता। सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलना 'डिजिटल इंडिया' भारत सरकार की नई पहल है। इसके तहत व्यक्ति सामाजिक सुविधाओं का लाभ आसानी से उठा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी इतनी समर्थ है, आज के दौर में कि घर बैठे ही सभी सूचनाएं उपलब्ध करा सकती है। यही कारण है कि सरकार ने राष्ट्र को सशक्त और समाज के जीवन स्तर को उन्नत करने के लिए 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम को आरम्भ की है।

'डिजिटल इंडिया' का वीजन है–प्रत्येक नागरिक के लिए उपयोगिता के आधार पर डिजिटल संरचना, मांग पर संचालन एवं सेवाएँ, तथा नागरिकों का डिजिटल सशक्तिकरण। 'नागरिकों को सेवाएँ उपलब्ध करने के लिए तेज इंटरनेट, डिजिटल पहचान अंकित करने का ऐसा उदगमन स्थल जो अनोखा ऑनलाइन और हर नागरिक के लिए प्रमाणित करने योग्य है, मोबाइल फोन व बैंक खातों को ऐसी सुविधा जिसमें डिजिटल व वित्तीय मामलों में नागरिकों की भागीदारी हो सके।" डिजिटल इंडिया कार्यक्रम से कई सामाजिक बदलाव आएं है। इसके फलस्वरुप ग्रामीण समाज भारतीय अर्थव्यवस्था को सशक्त करेगी।

इस कार्यक्रम के तीन पहलू है–प्रत्येक नागरिक के लिए सुविधा के स्वरुप में बुनियादी ढांचा जैसे पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ना, मोबाइल सेवाओं का विस्तार और मोबाइल से वित्तीय समावेशन। दूसरा प्रशासन एवं इसकी सेवाओं को आम नागरिक तक पहुँचाना जिससे उन्हें लम्बी कतारों, भ्रष्टाचार और मजदूरी के नुकसान से छुटकारा मिल सके और तीसरा प्रौद्योगिकी के माध्यम से ग्रामीण नागरिकों का सशक्तिकरण, जैसे – शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल का विकास साथ ही कंप्यूटर और मोबाइल पर भारतीय भाषाओं में काम करने को और आसान बनाना। डिजिटल इंडिया कि सफलता इस बात में निहित है कि भारतीय ग्रामीण इन सेवाओं का लाभ आसानी से ले सकें। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए देश के 55,000 गाँव में अगले 5 वर्षों के अन्दर मोबाइल संपर्क के लिए 20,000 करोड़ के 'यूनिवर्सल सर्विसेस ऑब्लिगेशन फण्ड' का गठन किया गया है। इससे ग्रामीणों के लिए इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग के इस्तेमाल में सुविधा होगी।

यह कार्यक्रम मंचों और सेवाओं के एकीकरण पेमेंट गेटवे, आधार संख्या आदि में सहायक साबित होगी। साथ ही सभी प्रकार के सूचनाओं को इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और डेटाबेस से उपलब्ध कराया जाएगा। किसानों के लिए रियल टाइम कीमत कि सूचना, कर्ज नकदी रहित भुगतान, मोबाइल बैंकिंग आदि की डिजिटल सेवा उपलब्ध करना भी इस कार्यक्रम में शामिल है। इसके अलावा स्वास्थ्य के क्षेत्र में ऑनलाइन मेडिकल सेवा रिकॉर्ड और सम्बन्धित दवाओं की आपूर्ति आदि ई-हेल्थ कार्ड की सुविधा देना भी इस कार्यक्रम का एक प्रमुख आधार है।

इस कार्यक्रम के तहत दस्तावेज और सूचना तक ऑनलाइन पहुँच भी उपलब्ध की जाएगी। नागरिकों तक सूचना मुहैया कराने के लिए सोशल मीडिया और वेब आधारित मंचों पर सरकार सक्रिय रहेगी। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत मोबाइल, इंटरनेट आदि तकनीकों को बढ़ावा देना तथा परिवर्तनकारी प्रक्रिया पुनर्रचना में सुधार पर ध्यान केन्द्रित करना। डिजिटलीकरण के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसों (उपकरणों), सेवाओं और उत्पादक को भी बढ़ावा देना शामिल है। इन बुनियादी सुविधाओं के बावजूद भी गाँव की अपनी सामाजिक समस्याएं भी है, जो पूरे ग्रामीण व्यवस्था को प्रभावित करती है।

निष्कर्ष : –डिजिटल क्रांति ग्रामीण समाज को सशक्त बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसका मतलब हमारा गाँव आगे बढ़ रहा है। स्मार्टनेस से गाँव को दूर रखने का अब कोई औचित्य नहीं बनता है। ग्रामीण इंटरनेट और मोबाइल ,एटीएम उपयोग करने के सोरर्दिन हो रहे हैं। सब मिलकर देखें तो डिजिटलीकरण से समग्र ग्रामीण का विकास हो रहा है।

सन्दर्भ सूची : –(1)ग्रामीण समाज और संचार बदलते आयाम : डॉ. निर्मला सिंह व गौतम ऋषि (2)कुरुक्षेत्र, ग्रामीण भारत में सामाजिक बदलाव, दिसम्बर 2015 (3)दैनिक भास्कर

Scanned with OKEN Scanner

ISSN : 2395-7115
April 2021
Vol. 13, Issue 4(2)

Impact Factor
3.811

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

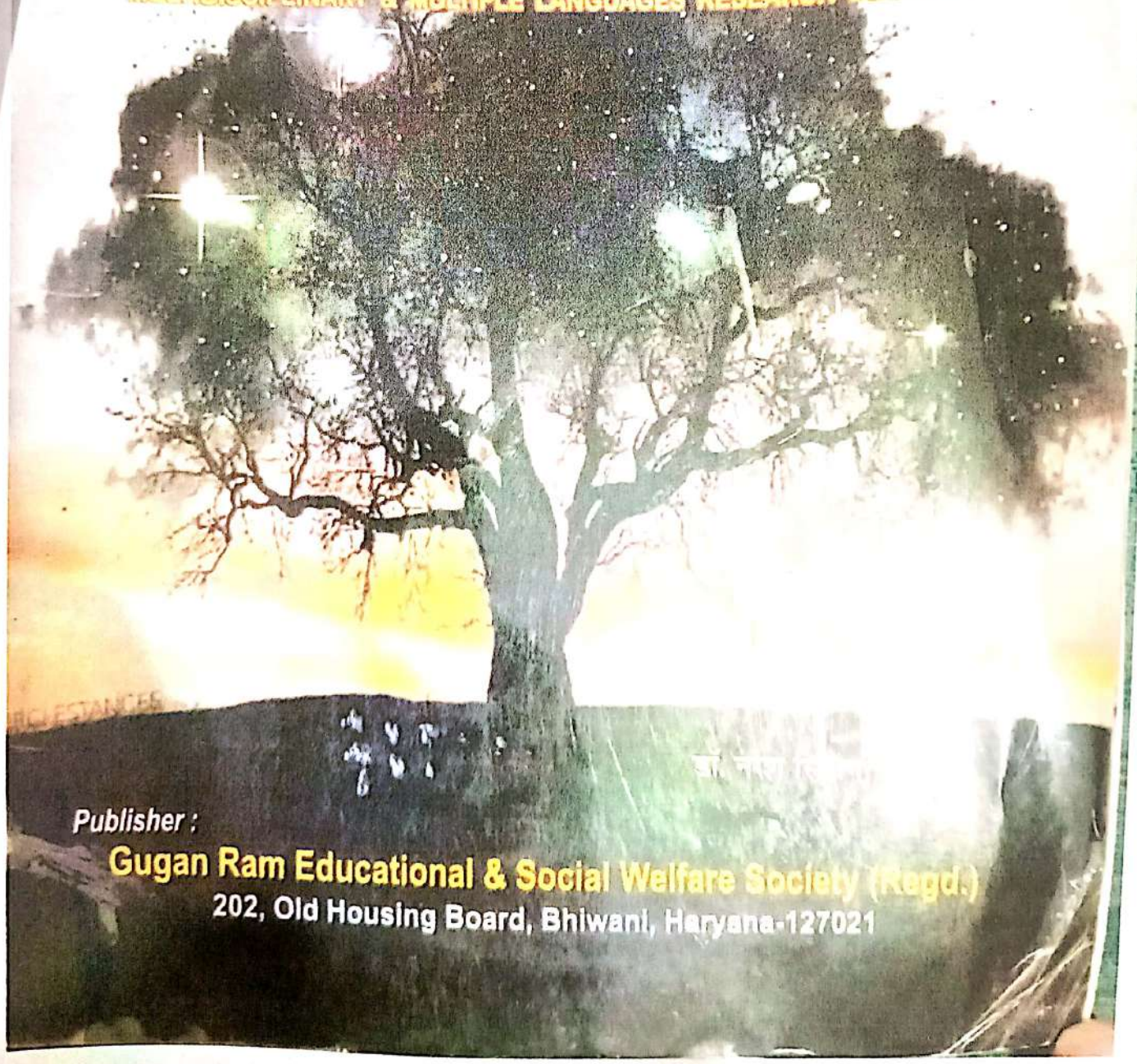

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

Scanned with OKEN Scanner

विषय	लेखक	पृष्ठ
सम्पादकीय	डॉ. नरेश सिहाग	8-8
Role of Education In The Development Of Society	Tinku Khatri	9-12
थर्ड जेंडर के जीवन का यथार्थ : 'मैं पायल'	शेलके प्रकाश चंदर	13-15
महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन	मनोज कुमार, डॉ. कालूराम	16-17
A Dilatory Speed of Women Political Representation: A Comparative Study	Neetu Singh Rai	18-27
बाल मनोविज्ञान और नीलम राकेश	फरह नाज	28-32
स्त्री शिक्षा का महत्व "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"	Dr. Deepak Sharma	33-34
श्रीमत्प्रतापराणायनमहाकाव्ये देशप्रेमरसः	डॉ. राजेश कुमार डेटानी	35-42
Eco-Romanticism in Synder's Views	Hemlata Kumari	43-44
डॉ. जयप्रकाश कर्दम की कहानियों में नारी जीवन	श्रीमती पंकज यादव	45-49
अकेली लड़ाई समाज और व्यवस्था को तोड़ती नहीं, स्वयं गरिमामय होते हुए भी टूट जाती है। 'लड़ाई' के विशेष सन्दर्भ में	डॉ. मिनी जोर्जे	50-56
निराला की कविताओं में युगबोध	निरूपम शक्तावत	57-60
प्रसाद व पंत के काव्य में प्रकृति	ममता रेवापाटी	61-66
पुराणों में नगरनिवेश की अवधारणा	आशुतोष शर्मा	67-70
बच्चों के जासूसी उपन्यासों का रहस्य भरा संसार	आरती. बी	71-72
प्रवासी कहानियों में बदलते वैयक्तिक मूल्य तथा पुरूष विमर्श	अमनदीप कौर	73-82
प्रेमचंद की कहानियों के नारी पात्रों की राष्ट्रीय चेतना	भैमूना. पी	83-86
भारत के आर्थिक विकास में बाधाऐं : एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण	अंजली कुमारी	87-90
मानवीय संवेदना में एक नवचेतना का जागरण : "ऐ जिंदगी तुझे सलाम"	माया कुमारी दास	91-94
श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में प्रतिबिंबित समाज	मुकेश चौहान	95-98

Scanned with OKEN Scanner

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2021 Page No. : 87-90
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

रत के आर्थिक विकास में बाधाऐं : एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

अंजली कुमारी
शोध छात्रा (पी.एच.डी) समाजशास्त्र विभाग, पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया, बिहार।

सारांश :-

समय के बदलाव के साथ आर्थिक व्यवस्था मे भी काफी बदलाव आए है। औद्योगीकरण को आर्थिक व्यवस्था मे हुए बदलाव मे से एक प्रमुख कारण माना जा सकता है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप समाज मे काफी परिवर्तन हुए। इस परिवर्तन ने अनेक प्रकार की समस्याऐं भी उत्पन्न की। जिससे आर्थिक विकास मे बाधाए आए। इन बाधाए को दूर करने के लिए हमे पहले आर्थिक व्यवस्था के सरचनागत ढाँचा जिसके तहत वस्तुओं के उत्पादन, प्रयास वितरण आदि को समझना तथा इन वस्तुओ के उत्पादन में कौन–कौन से तकनीक का प्रयोग किया जाए जिससे वर्तमान तथा भविष्य के लिए लाभदायक हो। सरकार ने भारत की अर्थव्यवस्था में सुधार लाने के "आत्मनिर्भर भारत अभियान", मेक इन इंडिया का शुभारभ किया। हम इन अभियानो को बढ़ावा देकर देश की अर्थव्यवस्था के बाधा को दूर कर इसमे सुधार ला सकते हैं।

शब्द कुंजी- आर्थिक विकास, आर्थिक विकास मे बाधाएं भारत की अर्थव्यवस्था।

प्रस्तावना :-

मनुष्य को जीवित रहने के लिए उसे कुछ मूलभूत आवश्यकता की जरूरत होती है। इन आवश्यकताओ की जरूरत होती है। इन आवश्यकताओं में हम कह सकते हैं। भोजन, वस्त्र तथा उसका निवास। इसको प्राप्त किये बिना मनुष्य का जीवित रह पाना कठिन है। और उसका सामाजिक जीवन भी संभव नही है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के दौरान मनुष्य के द्वारा किया गया प्रयास अर्थव्यवस्था को जन्म देती है।

इस अर्थव्यवस्था के विकास के बाद इसके कई चरणों मे विकास होता रहा पहले चरण, मे मनुष्य भोजन एकत्रित करने तथा शिकार करने में लगा रहता था भोजन एकत्रित में वह फल, कन्दमूल से अपना जीवन यापन करता था उस अवस्था में लोग सम्पत्ति जमा करने या व्यापार में नहीं लगे रहते थे उसके बाद दूसरा चरण, जिसे बरागाह अवस्था कहते हैं। इस समय मनुष्य पशु का शिकार करने की बजाय उसे पालने लगे उसे अपना सम्पत्ति समझने लगे। बरागाह भूमि को निजी सम्पत्ति समझते तथा भूमि की सार्वजनिक सम्पत्ति समझने लगे। तीसरा चरण इस अवस्था मे मनुष्य कृषि कार्य करने लगे। भूमि तथा कृषि उपकरणों को अपना सम्पत्ति समझने लगे। इस अवस्था में जमीदारी प्रथा का प्रारभ हुआ। तथा इसके साथ हीं मुद्रा और बाजारों की स्थापना हुई। चौथे चरण जिसे अभी आधुनिक युग को कहा जा सकता है।

इस युग में नई आविष्कारों एवं मशीनों के उपयोग से उद्योगो की स्थापना में अपना सहयोग दिया। उद्योगो मे अत्यधिक मात्रा में उत्पादन बढ़ा। नई सचार प्रक्रिया ने व्यापार को और भी सरल बना दिया। जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा मिला। साथ ही साथ इसके कुछ नाकारात्मक परिणाम भी सामने आए। जैसे– श्रम समस्याओं ने जन्म लिया, वितरण एवं विनिमय की नई व्यवस्था उत्पन्न हुई, मुद्रा का प्रचलन बढ़ा। इस प्रकार कहा

जा सकता है कि आधुनिक औद्योगिक व्यवस्था ने अनेक जटिल समस्याओं को जन्म दिया। जिससे भारत के आर्थिक विकास मे अनेक बाधाऐ उत्पन्न हुए।

अर्थव्यवस्था :-

अगर हम अर्थव्यवस्था को समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखते है तो हमें सम्पत्ति एव पूँजी की अवधारणा को समझना होगा। अगर हमे सम्पत्ति की बात करे तो एक प्रमुख समाजशास्त्री पियरे जोसेफ प्रूदों ने कहा "सम्पत्ति" चोरी से कमाई जाती है। यह ईमानदारी, परिश्रम और न्याय से कभी कमाया ही नही जा सकता।" इसी तरह अगर पूँजी को समझे तो पूँजी वह धन जिससे लाभ प्राप्त किया जा सके। जिसका संचय करना आवश्यक हो। सामान्यत: उद्योगपति से अपने व्यवसाय मे लगाता है। इसके दो प्रकार होते है एक को स्थिर पूँजी कह सकते है जिसमे सम्पत्तियों की प्राप्त करने के लिए जो धनराशि लगायी जाती है। तथा दूसरा को कार्यशील पूंजी कह सकते है। जिसे व्यवसाय के दैनिक कार्यों के लिए इस्तेमाल होती है।

इसके अलावा Share को भी पूँजी का एक निश्चित भाग मान सकते हैं। इसमें भी अधिकृत अंश पूंजी, निर्गमित अंशपूँजी प्रार्थित अंशपूँजी, याचित अंशपूँजी, प्रदत्त अंशपूँजी, संचित अंशपूँजी को देखा जाता है।

आर्थिक विकास की अवस्थाएँ :-

"रोस्टो" ने आर्थिक विकास की पाँच अवस्था बताई है जिसे ग्राफ के द्वारा समझा जा सकता है।

रेखाचित्र-1 आर्थिक विकास के उत्कर्ष की अवस्थाएँ

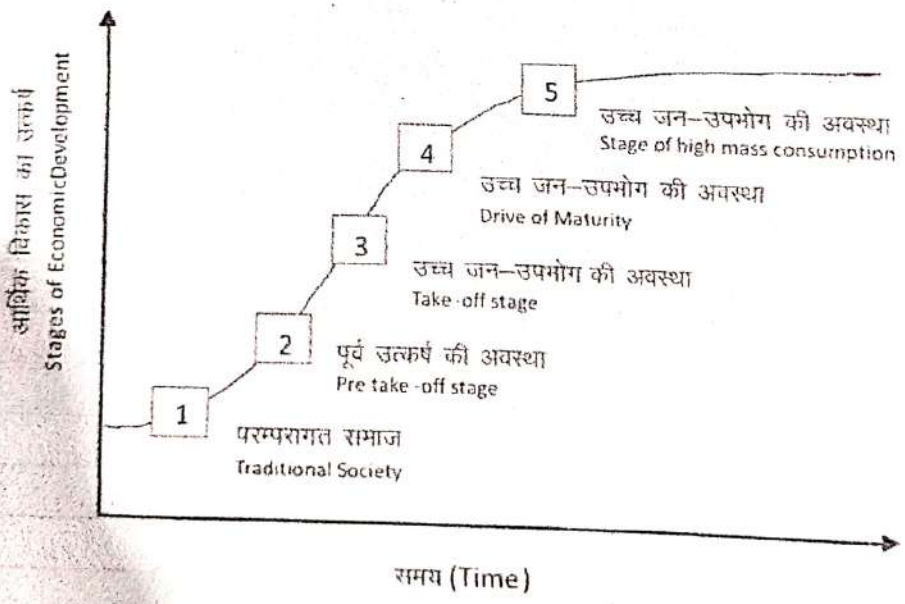

आर्थिक विकास के सामाजिक परिणाम :-

सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से देखे तो समाज पहले काफी अविकसित था। गरीबी की स्थिति समाज में बनी रहती थी। समाज के लोग प्रकृति पर निर्भर रहते थे। तथा कई सारे कठिनाई को झेलते थे। धीरे–धीरे समय में परिवर्तन होता गया। समाज की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति में सुधार होता गया। लोगों की प्रगति होती गई। समाज के लोग

Scanned with OKEN Scanner

[illegible] आर्थिक तथा [illegible] का निर्माण करने लगे। लेकिन समाज की यह सामाजिक तथा आर्थिक प्रगति सभी लोगों को समान रूप से नहीं मिल पाया। समाज में दो वर्गों का उदय हुआ। एक वर्ग अमीर तथा दूसरा गरीब [illegible] जो अमीर थे वे आर्थिक राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टि से शक्तिशाली और प्रतिष्ठित होते गये [illegible] गरीब लोग आर्थिक राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टि उतने शक्तिशाली और प्रतिष्ठित नहीं होने जितने की अन्य [illegible]

जिसका फलत यह परिणाम हुआ की समाज में निर्धनता बढती गई। अमीर लोग और अमीर होते गए। और गरीब लोग और गरीब होते गए।

भारत के आर्थिक विकास में बाधाएँ :-

भारत के आर्थिक विकास को देखे तो इसके विकास मे बाधा देने वाले कई कारक उभरकर सामने आते है। भारत गांवों का देश है। देश की 70 प्रतिशत जनसंख्या गाँव में निवास करती है। इनका मुख्य कार्य कृषि है। जनसंख्या की भारी निर्भरता कृषि पर निर्भर है। जो भारतीय अर्थव्यवस्था के पिछड़ेपन को बताता है। यह कृषि व्यवस्था जनसंख्या के मांग और पूर्ति को पूरा करने मे लगा रहा है। इस कृषि व्यवस्था से देश के विकास मे मात्र G.D.P का 17 प्रतिशत योगदान दे पाता है। इसी तरह अगर हम भारत की जनसंख्या की ओर देखे तो यह विश्व में दूसरे स्थान पर है।

यहाँ पर उच्च स्तर पर जन्म दर और मृत्यु दर का गिरता स्तर है। इस जनसंख्या की बुनियादि आवश्यकताओ को ध्यान मे रखते हुए सरकार इसके भोजन, आश्रय, स्वास्थ्य, स्कूली शिक्षा पर आर्थिक बोझ बढता जा रहा है। अगर हम तकनीक व्यवस्था की ओर देखते है तो हर दिन नई–नई तकनीको का आविष्कार किया जाता रहा है। लेकिन इस तकनीकी व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए पूँजी, शिक्षित तथा कुशल कर्मचारियों की जरूरत होती है। लेकिन हमारी देश की इतनी बडी जनसंख्या होने के बावजूद मानव कौशलो की कमी और अकुशल श्रमशक्ति की अनुपस्थिति आर्थिक विकास मे बडी बाधाऐ है।

भारत की आर्थिक विकास में प्रत्यक्ष रूप मे इतनी बाधाऐ होने के बावजूद अगर हम अप्रत्यक्ष रूप मे कारक के रूप में सामने आते है। संवैधानिक रूप से हम जाति प्रथा के सिद्धांत को समाप्त कर देने के बावजूद कुछ जातियो द्वारा आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक कार्यों पर एकाधिकार कर लिया गया है। जिसके परिणाम स्वरूप समाज मे सामाजिक अशांति उत्पन्न होती है। कहीं न कहीं ये अशांति हमारे राष्ट्र की स्वस्थ आर्थिक विकास पर बाधाएँ डालती है। अगर अभी की वर्तमान समय की बात करे तो कोविड–19 महामारी की वजह से विश्व की अर्थव्यवस्था संकट का सामना कर रहा है। कहा जाता है कि 1930 के महामंदी के बाद कोविड–19 की वजह से ऐसी महामंदी आई है। इस महामारी के वजह से हमारे देश में स्वास्थ्य तथा आर्थिक दोनो स्थितियो का बडे चुनौति ढंग से सामना करना पडा है। कोविड–19 को भारत की अर्थव्यवस्था में सबसे बडा बाधा के रूप मे देखा जा सकता है।

निष्कर्ष :-

भारत की अर्थव्यवस्था मे सुधार लाने के लिए सरकार को सबसे पहले नीतियों मे जरूरत के अनुसार बदलाव तथा नई नीतियाँ बनाने चाहिए। इसके साथ ही गरीबी तथा बेरोजगारी को दूर करने के लिए अस्थायी रोजगार कार्यक्रमो के द्वारा लोगों को जागरूक करना होगा। आर्थिक विकास के लिए पूंजी तथा श्रम दोनो की आवश्यकता होती है। सरकार को इन दोनों क्षेत्रों पर ध्यान देना होगा। साथ ही भारत कृषि प्रधान देश है। इसके लिए सरकार को कृषि क्षेत्र मे [illegible] विशेष ध्यान की आवश्यकता है जिससे इस क्षेत्र मे रोजगार तथा आय मे वृद्धि हो सकेगा। इसी तरह सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग में ध्यान देने की आवश्यकता है। संभवत इन सब प्रयासो के द्वारा देश की आर्थिक विकास की बाधाओ को दूर कर विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ :

1. जे.पी.सिंह (2013), तृतीय संस्करण (PHI) समाजशास्त्र अवधारणा एवं सिद्धांत, पृष्ठ सं0 – 465
2. योजना, नवम्बर 2020
3. प्रो0 गुप्ता, डॉ0 शर्मा (2019), समाजशास्त्र साहित्य भवन, पृ0 सं0 449
4. वही, अध्याय – 35 / 454
5. जे.पी.सिंह (2013), तृतीय संस्करण (PHI) समाजशास्त्र अवधारणा एवं सिद्धांत, पृष्ठ सं0– 466
6. वही अध्याय – 21 / 478
7. वही, अध्याय – 21 / 479

Scanned with OKEN Scanner